17 अगस्त 2011, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77

RJ / J.P.C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 10
अगस्त (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537)

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

३४वां आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के मंगल प्रभावना में संस्थापित 'श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट' द्वारा विगत 33 वर्षों से 'श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर' में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की परम्परा अनवरत रूप से चलती आ रही है। इसी शृंखला में इस वर्ष रविवार दिनांक 31 जुलाई से मंगलवार 9 अगस्त 2011 तक 34वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिक्षण शिविर का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी जैन नीरु केमिकल्स दिल्ली के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री वाडीलाल लल्लूभाई शाह अहमदाबाद के प्रतिनिधि के रूप में श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर ने की।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट का परिचय श्री सुमनभाई दोशी राजकोट ने दिया। मंचासीन समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सुमनभाई दोशी एवं (सदस्य) श्री अशोककुमारजी जैन जबलपुर ने तिलक लगाकर माल्यार्पण किया।

उद्घाटन सभा के मुख्य अतिथि श्री अभयकरणजी सेठिया सरदारशहर एवं श्री मदनलालजी पाटनी मुम्बई रहे। उद्घाटन सभा के पूर्व शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री गम्भीरमलजी प्रकाशचंदजी सेमारी अहमदाबाद ने, शिविर मंच का उद्घाटन श्री निहालचंदजी ओसवाल जयपुर ने एवं विधान का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी जैन जबलपुर ने किया। ध्वजारोहण श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ परिवार के करकमलों से हुआ। आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री श्री पी.के.जैन रुड़की एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्री दिलीपभाई शाह जयपुर द्वारा किया गया। 34वें शिक्षण शिविर के आयोजनकर्ता श्री भभूतमलजी भंडारी बैंगलोर, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा एवं श्री नवीनचंदजी केशवचंदजी मेहता मुम्बई रहे।

इस अवसर पर नवलब्धि विधान का आयोजन किया गया, जिसके आयोजक श्री बाबूलालजी पंचोली थांदला, श्री मगनलालजी मामा आरोन, श्री नेमीचंदजी ग्वालियर, श्री देवेन्द्रकुमार कोमलचंदजी जैन केसली, श्रीमती ममता कमलकुमारजी केसली, श्रीमती नत्थीबेन केसली, श्रीमती कमलरानी बाबूलालजी सिंघई केसली थे।

कार्यक्रम का संचालन ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद ने किया।

विद्वत् शिरोमणि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने शिविर के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

शिक्षण शिविर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रात:काल समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रतिदिन चलने वाली प्रौढ कक्षाओं में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर द्वारा निमित्त-उपादान, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित प्रकाशचंदजी छाबड़ा इन्दौर द्वारा गोम्मटसार, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा कार्तिकेयानुप्रेक्षा की कक्षा ली गई।

दोपहर की सभा में प्रतिदिन बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन तदुपरान्त आयोजित व्याख्यानमाला में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, पण्डित सुरेशजी टीकमगढ, पण्डित विनोदजी जबेरा, पण्डित अनिलजी भिण्ड आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात:कालीन प्रौढ कक्षाओं में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित विनोदजी जबेरा, ब्र. विनोदजी गुना, पण्डित कमलजी जबेरा, पण्डित शेषकुमारजी उभेगांव, पण्डित जगदीशजी उज्जैन इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित सुनीलजी भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न हुये।

शिक्षण शिविर के समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के निर्देशन में संपन्न हुये।

हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2011 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हमारा भावभीना हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय – ✍ 62

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– १००

विगत गाथा में द्रव्यों की मूर्तता एवं अमूर्तता का व्याख्यान किया। प्रस्तुत गाथा में काल द्रव्य का व्याख्यान करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

कालो परिणामभवो परिणामो दव्वकालसंभूदो।
दोण्हं एस सहावो कालो खणभंगुरो णियदो।।१००।।

(हरिगीत)

क्षणिक है व्यवहार काल अरु नित्य निश्चय काल है।
परिणाम से हो काल उद्भव काल से परिणाम भी ।।१००।।

व्यवहार काल का माप जीव पुद्गलों के परिणाम से होता है। परिणाम द्रव्यकाल से उत्पन्न होता है। यह दोनों का स्वभाव है। काल क्षणभंगुर तथा नित्य है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि यह व्यवहार काल तथा निश्चय काल का व्याख्यान है। 'समय' नाम की जो क्रमिक पर्याय है वह व्यवहारकाल है उसके आधारभूतद्रव्य निश्चयकाल है।

व्यवहारकाल निश्चय काल पर्याय होने पर भी जीव पुद्गलों के परिणाम से नपता है, ज्ञात होता है। इसलिए ''जीव पुद्गलों के परिणाम बहिरंग-निमित्त भूत द्रव्यकाल के सद्भाव में उत्पन्न होने के कारण द्रव्यकाल से उत्पन्न होनेवाले कहलाते हैं।''

तात्पर्य यह है कि व्यवहारकाल जीव-पुद्गलों के परिणाम द्वारा निश्चित होता है और निश्चयकाल जीव-पुद्गलों की अन्यथा अनुत्पत्ति द्वारा निश्चित होता है। अन्यथा अनुत्पत्ति अर्थात् जीव व पुद्गलों के परिणाम अन्य प्रकार से नहीं बन सकते।

व्यवहारकाल क्षणभंगुर हैं एवं निश्चयकाल नित्य है, क्योंकि व्यवहारकाल एक समयमात्र जितना ही है और निश्चयकाल अपने गुण-पर्यायों के आधारभूत द्रव्यरूप से सदैव रहता है, अविनाशी है।

कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

छिन भंगुर विवहारतैं, सूच्छिम परजय मान।
निहचैकाल अचलसदा, गुनपरिजाय निधान ।।४३४।।
समै काल विवहार है, निहचै काल सरूप।
दोनों की वरनन कह्या जु मान अनुरूप ।।४३५।।

कवि कहते हैं कि व्यवहारकाल क्षणभंगुर है, एक समय की सूक्ष्म पर्याय है तथा निश्चयकाल अचल है। समय, घड़ी, घंटा आदि व्यवहार काल है।

इसी का स्पष्टीकरण करते हुए गुरुदेवश्री अपने व्याख्यान में कहते हैं कि ''जो क्रम से अतिसूक्ष्म प्रवर्तता है, वह व्यवहारकाल है तथा उस व्यवहारकाल का आधार निश्चयकाल है। काल शब्द से कथित काल नामक द्रव्य भी है।

व्यवहारकाल एकसमय की पर्याय है, तथा निश्चयकाल पर्यायवान है। व्यवहारकाल निश्चयकाल से उत्पन्न होता है। उसमें पुद्गल द्रव्य की जीर्ण होनेरूप अवस्था निमित्त है, इसकारण जीव-पुद्गल के परिणाम अर्थात् परिणमन से व्यवहार काल का माप होता है।

इससे यह नक्की होता है कि समय आदि व्यवहार काल है। वह जीव व पुद्गल की पर्याय से सिद्ध होता है। तथा समय आदि व्यवहारकाल है तो उसके साथ-अविनाभाव सम्बन्ध से निश्चयकाल भी द्रव्य है – यह सिद्ध होता है। व्यवहार काल क्षणिक एवं निश्चयकाल नित्य है।'' इसप्रकार कालद्रव्य के अस्तित्व को सिद्ध किया। ●

पाठकों के पत्र

वीतराग विज्ञान के हीरक जयन्ती विशेषांक को पढ़कर **मुम्बई से श्री जीवराज खुशालचंद गांधी (जे.के. गांधी)** लिखते हैं कि –

'आपकी हीरक जयन्ती समाज मना रही है – यह समाचार वीतराग-विज्ञान का मई-जून संयुक्तांक मिलने से विदित हुआ। इसमें आपके साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने वाले विद्वानों ने वास्तव में बहुत अच्छा विश्लेषण किया है। यह बहुत गर्व की एवं संतोषजनक बात है।

आपका मेरा 50-55 वर्षों से परिचय है। आपको श्री रावसाहेब शहा व हमारे भाई हीराचंदजी ने नातेपुते में आमंत्रित किया था। उस समय से सोनगढ की प्रतिष्ठा आदि अनेक अवसरों पर समागम होता रहा। टोडरमल स्मारक भवन निर्माण होने के बाद आपसे बार-बार मिलना होता रहा।

आपकी हीरक जयन्ती का आयोजन हुआ; क्योंकि आप अपने अभीक्ष्ण ज्ञान से जिनवाणी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं और करते रहेंगे – इसके लिये मैं बधाई देता हूँ और आपके दीर्घ आरोग्य सुख समाधान और जिनवाणी की सेवा अक्षुण्ण होती रहे – इसके लिए जिनेश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

मेरी उम्र अभी 95 वर्ष की पूरी हुई है, फिर भी आपसे मिलने के अवसर की बहुत प्रतीक्षा करता हूँ। वैसे आपके दोनों चिरंजीव परमात्मप्रकाश और अध्यात्मप्रकाश मुम्बई में रत्न व्यवसाय में होने के कारण मिलते रहते हैं और उनसे आपका समाचार मिलता रहता है।

आपकी दीर्घ आयु की भावना रखता हूँ।

आप आपके भाषण में अध्यात्म का विवेचन बहुत सुचारु रूप से करते हैं। उसका परिचय मुझे दिल्ली में देखने को मिला, जब आपका व्याख्यान श्री 108 आचार्य विद्यानन्दजी महाराज ने लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ में आयोजित किया था। उसमें व्यवहार और निश्चय के बारे में आपने कहा था कि आदमी नदी पार करने के लिये नाव में बैठता है और नदी पार करने के बाद छोड़ देता है। वैसे ही व्यवहार नय का परिचय संसार में होने के बाद अध्यात्म के विचार करता है।

इससे ज्ञात होता है कि आप कठिन से कठिन आध्यात्मिक विषय अपने व्याख्यान में सुचारु रूप से समझाते हैं, यह आपकी समाज को बहुत बड़ी देन है। **– जीवराज खुशालचंद गांधी**

नोट : ये जे. के. गांधी, लन्दनवाले एम.के. गांधी के भाई हैं।

कार्यकारिणी पुनर्गठित

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी निम्नानुसार है –

अध्यक्ष-श्री चैतन्यजी गाडेकर, **सचिव (मंत्री)**-पण्डित किशोरजी धोंगडे, **कोषाध्यक्ष**-पण्डित चिन्तामणि भूस, **प्रचार मंत्री**-श्री कैलाश धोंगडे, **संगठन मंत्री**-पण्डित आतीश जोगी, **सदस्य**-श्री संजयजी धुमाळ, श्री सचिनजी महिंद्रकर, श्री रविजी संगवे, श्री सचिनजी भूस, श्री देवेन्द्रजी गाडेकर, श्री रविजी अंबेकर, **मार्गदर्शक**–पण्डित संजयकुमारजी राऊत, पण्डित गुलाबचंदजी बोराळकर, श्री रत्नाकरजी गाडेकर चुने गये।

डॉ. भारिल्ल से कुछ प्रश्न और उनके उत्तर

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, मुम्बई

आप किसी का जवाब क्यों नहीं देते, किसी से चर्चा क्यों नहीं करते ?

अरे जीवन भर यही सब तो करते आये हैं।

गुरुदेव के बारे में भी लोग ऐसा ही कहते थे, पर वे भी आजीवन रोज रात को 45 मिनिट की चर्चा में लोगों के सवालों के जवाब देते रहे, सारे जीवन चर्चा ही तो करते रहे, पर हाँ वे वाद–विवाद नहीं करते थे।

यूं तो उनके दरवाजे दिनभर सभी के लिए खुले रहते थे।

हमारा भी तो ऐसा ही है।

हम तो हमेशा ही सबके लिए उपलब्ध हैं, कोई भी कभी भी चला आता है और हम भी उसके सब सवालों के यथासंभव जवाब देते ही हैं।

हाँ एक बात है – ये सभी जिज्ञासु लोग होते हैं, समझने के लिए आते हैं, अपना कल्याण करने के लिए; या कार्यकर्ता लोग आते हैं काम में आने वाली कठिनाइयाँ दूर करने के लिए।

सच्चाई तो यह है कि जिनके अन्दर बहस करने की भावना है; वे लोग तो आते ही नहीं हैं।

लोग कहते हैं डर लगता है आपसे –

पर हमने तो कभी किसी को डराया नहीं।

हाँ ! बहस करने में हमें भी कोई रुचि नहीं है; क्योंकि बहस कोई आत्मकल्याण के लिए नहीं करता।

हमने अपना जीवन अपने कल्याण के लिए और औरों को कल्याण में निमित्त बनने के लिए समर्पित किया है; जीवन छोटा है और काम बहुत है, जो समझने के लिए आता है, वह तो इशारे मात्र से समझ जाता है और जो बहस करता है, उसे तो समझना ही नहीं है, वह समझेगा कैसे ?

कदाचित् वह तो हमें समझाने के फेर में रहता है, हमें उससे समझने की आवश्यकता नहीं है।

हमारे पास जिनवाणी है, उसका मर्म समझने की विधि है।

हमने तो जीवन भर किसी अन्य विषय में उलझे बगैर मात्र स्वाध्याय और तत्त्वप्रचार किया है और अब भी उसी में लगे हैं। जिसे अपना कल्याण करना है, वह चाहे जितनी बात कर ले हम से, हम कभी मना नहीं करेंगे।

जिसे हमारी बात समझ में नहीं आती, वह अपने चित्त से हमारा विकल्प निकाल दे।

आपके बारे में लोगों की धारणा यह है कि अपनी तर्क शक्ति के सहारे आप अपनी सही–गलत सभी बातें लोगों से मनवा लेते हैं।

ऐसे लोगों की बातों से यह ध्वनित होता है – मानो तार्किक होना कोई अपराध हो ?

अरे ! तर्क तो जैन न्याय का मूल आधार है, जिसके द्वारा हम तथ्यों का अन्वेषण कर सकते हैं, किसी विषय की गहराई में जा सकते हैं, सत्य का सही निर्णय कर सकते हैं।

हर व्यक्ति में तर्क करने की शक्ति न भी हो, पर कम से कम तर्क समझने की योग्यता तो होनी ही चाहिए न ? हममें यदि यह कला कम हो या न हो तो अभ्यास के द्वारा यह विकसित करना चाहिए, इसके बिना न तो स्वकल्याण किया जा सकता है और न ही पर का। इससे किसी भी सज्जन पुरुष को न तो परहेज हो सकता है और न ही होना चाहिए।

तर्क से सिर्फ उन्हीं लोगों को एतराज हो सकता है, जो अपनी अतार्किक (और इसलिए असत्य) बातें लोगों के गले उतारना चाहते हैं।

अतार्किक बातें सिर्फ लोगों को भ्रमित ही कर सकती हैं, किसी का कल्याण नहीं कर सकतीं।

धर्म (आत्मकल्याण) के क्षेत्र में भावनाओं को कोई स्थान नहीं है, सत्य की खोज तर्क से होती है, भावनाओं से नहीं। लोक में भी न्यायालय में तथ्य और तर्क ही स्वीकार किये जाते हैं।

भावनाओं की न तो कोई सीमा होती है और न ही कोई दिशा, रही बात तर्क शक्ति के सहारे अपनी गलत बातें लोगों से मनवा लेने की, सो दुनियां में कोई हम अकेले ही तो तार्किक हैं नहीं, अन्य भी तो अनेकों लोग तर्क शक्ति से संपन्न हैं। यदि हम कुतर्क करेंगे तो क्या वे हमारे कुतर्कों को चलने देंगे ?

आज तक तो हमारे सामने ऐसा कोई प्रसंग उपस्थित हुआ नहीं है कि किसी ने हमारी तार्किक व्याख्या का खंडन किया हो।

प्रश्न यह भी तो है कि आखिर हम ऐसा क्यों करेंगे ? आखिर क्यों हम जिनवाणी के विरुद्ध कोई अतर्कसंगत और अयुक्तियुक्त बात का प्रतिपादन करेंगे ?

यह जीवन आत्मकल्याण करने के लिए है, संसार काटने के लिए है, संसार बढाने के लिए नहीं है।

क्या कोई यह समझता है कि मैं दुनिया को कुमार्ग पर लगाकर अपना अनंत संसार बढाने का काम करूँगा ?

लोगों को लगता है कि आप उनकी उपेक्षा करते हैं, उनकी सुनते नहीं हैं, उनकी बातों या सुझावों पर ध्यान नहीं देते हैं, उनकी बात मानते नहीं हैं। इस कारण वे निरन्तर आपसे असंतुष्ट बने रहते हैं।

कैसी बातें करते हो ? हमारे पास सैंकड़ों विद्वानों और हजारों कार्यकर्ताओं की एक समर्पित टीम है, जो देशभर में फैली हुई है और तत्त्वप्रचार के काम में संलग्न है। देश और विदेशों में तत्त्वप्रचार का जो इतना बड़ा ज्ञानयज्ञ चल रहा है, क्या यह सब इन सब लोगों के सक्रिय सहयोग और निकट संपर्क के बिना संभव है ?

किसी भी छोटे बड़े कार्यकर्ता या सामान्यजन के लिए हम 24 घंटे उपलब्ध हैं, हमारे पास हजारों लोग आते हैं, हम सभी से प्रेम से मिलते हैं, सभी की बात ध्यान से सुनते हैं और कोई भी यदि तत्त्वप्रचार की कोई छोटी–बड़ी योजना लेकर आता है तो उसे हम पूरा सहयोग देते हैं, न तो हम किसी से करते ही नहीं हैं, हमारे यहाँ से आज तक कोई निराश होकर नहीं लौटा है।

रही बात सुझावों पर ध्यान न देने की, सो ऐसी कोई बात नहीं है, लोग भोले होते हैं, वे समझते हैं कि हम समाज सेवा का काम करते हैं सो वे तरह–तरह के सुझाव लेकर आते हैं। कोई कहता है कि विधवाओं के लिए कुछ करना चाहिए, कोई कहता है कि वृद्धों के लिए कुछ कीजिए और इसी तरह की अन्य अनेकों बातें लोग करते हैं।

हम उन्हें समझाते हैं कि अरे भाई ! करने को तो दुनिया में अनेकों काम हैं और सारे काम तो देश की सरकार भी नहीं कर पाती है, हमारी तो शक्ति सीमित है और समय भी।

किसी के विषय–कषाय के पोषण की गतिविधियों में हमारी कोई रुचि नहीं है, ये काम करने वाले तो अन्य अनेकों लोग और संस्थाएं हैं। हम तो आत्मार्थी हैं और हमारा कार्यक्षेत्र मात्र आत्मकल्याण और तत्त्वप्रचार की गतिविधियों तक ही सीमित है।

मैं उन लोगों की चर्चा नहीं कर रहा हूँ, जो सामाजिक काम करते हैं, मेरा आशय तो उन लोगों से है जो आप ही की तरह से आत्मार्थी और स्वाध्याय प्रेमी हैं और तत्त्वप्रचार के काम में संलग्न हैं या अपना योगदान देना चाहते हैं।

अब किसी के बारे में क्या कहूँ ? कौन क्या कर रहा है, क्या कहता है, क्या करना चाहता है, किसने अब तक क्या किया है, यह सब तो सबके

सामने है। हाँ मैं अपनी रीति–नीति की चर्चा कर सकता हूँ।

पूज्य गुरुदेवश्री ने कभी स्वाध्याय और तत्त्वप्रचार के सिवाय कुछ नहीं किया। वे तो असाधारण महामानव थे, चाहते तो क्या नहीं कर सकते थे, पर वे कभी अपने मार्ग से भटके नहीं।

मुझे भी जब टोडरमल स्मारक में आने का प्रस्ताव मिला तो मैंने भी अपनी उस 32 वर्ष की उम्र में यही संकल्प किया कि मैं अपने समय, शक्ति और श्रम का उपयोग मात्र स्वाध्याय और तत्त्वप्रचार के लिए ही करूँगा और इस मार्ग से च्युत करने के लिए चाहे किसी भी प्रकार का कोई भी दबाव या प्रस्ताव आये, मैं इससे विचलित नहीं होऊँगा।

तब तो मेरी उम्र भी कम थी और मुझसे बहुत अधिक वरिष्ठ अनेकों विद्वान, श्रेष्ठि और अन्य शुभचिन्तक लोग विद्यमान थे; जो यह मानते थे कि अध्यात्म जैसे इस शुष्क विषय का इस भौतिकवादी युग में कोई भविष्य नहीं है और इस काम में अपने आपको झोंकना अपना जीवन खराब करना है।

उनका कहना था कि तुम्हारे पास जयपुर जैसे शहर के हृदय स्थल पर इतनी बड़ी बिल्डिंग है और इसमें तो तुम क्या क्या नहीं कर सकते हो, कमाल किया जा सकता है और वे अनेक लौकिक महत्वांकांक्षी योजनायें सुझाते थे। उस समय से लेकर आज तक ऐसे सुझाव और योजनायें लेकर आने वाले लोगों का तांता लगा हुआ है। उनकी योजनायें इतनी आकर्षक और लुभावनी होती है कि सहज ही कोई भी उनकी बातों में आ जाये।

मैं उनसे हाथ जोड़कर कहता हूँ कि भाई साहब आपकी योजना बहुत अच्छी है और आप अवश्य यह काम करें और मुझे मेरा काम करने दें, मुझे अपने इस तत्त्वप्रचार के काम के सिवाय किसी भी अन्य कार्य में कोई दिलचस्पी नहीं है।

इस पर भी जब वे नहीं मानते तो मुझे दृढतापूर्वक अपनी बात उन्हें समझानी पड़ती है और तब उन्हें लगने लगता है कि मैं अपनी मनमानी करता हूँ, किसी की सुनता नहीं हूँ।

पिछले 44 सालों से लगातार वे कहते रहे कि यह सफल नहीं होगा और हम अपने इसी काम में लगे रहे और आज जो कुछ भी है, सब आपके सामने है।

देशभर में 320 वीतराग–विज्ञान पाठशालाएं, 312 युवा फैडरेशन की शाखाएं और उनके माध्यम से भी पाठशालाओं का संचालन, स्वाध्याय की परम्परा का जारी रहना, हजारों ग्रुप शिविरों का आयोजन, जीवन में सदाचार, 45 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन और उसके माध्यम से 8944 से अधिक शिक्षकों की ट्रेनिंग, महाविद्यालय के माध्यम से जैनदर्शन के 573 विद्वानों का तैयार होना और उनके द्वारा देशभर में अनेक संस्थाओं का संचालन, इतनी विशाल संस्था में करोड़ों के सत्साहित्य का प्रकाशन और बिक्री – ये सब काम ऐसे हैं, जिन्होंने लोगों की कल्पना और अनुमानों को झूंठा साबित कर दिया है, उनके सुझावों की निरर्थकता साबित कर दी है, अब तुम क्या चाहते हो कि हम उनकी सुनकर यह सब बंद कर दें ?

जिसप्रकार मुनिराज का भोजन ग्रहण भी आत्म साधना के लिए होता है और भोजन त्याग भी आत्म साधना के लिए; उसीप्रकार हमारी तो हर गतिविधि सिर्फ तत्त्वप्रचार के लिए ही होती है।

हमने तो जीवनभर यही किया है, यही पढ़ा है, यही पढ़ाया है और पढ़ने–पढ़ाने के सिवाय अन्य कोई काम हमने किया नहीं है, इसे ही हम उत्कृष्टतम काम मानते हैं और अपने शेष रहे जीवन में यही सब करना चाहते हैं, यह वह काम है जो तीर्थंकर और गणधर देव भी करते हैं।

अरे ! स्वयं कुछ और करना तो बहुत दूर, हम तो किसी को कुछ और करने की प्रेरणा भी नहीं देते हैं न देंगे।

हम तो ऐसी व्यवस्था करके जाएंगे कि हमारे बाद भी कोई इस संस्था को किसी अन्य मार्ग पर न ले जा सके। यहाँ यदि कोई बात हो तो आत्मा के हित की बात हो।

मान लिया कि आप तत्त्वप्रेमी हैं और तत्त्वप्रचार में आपका बहुत बड़ा योगदान है। इससे तो कोई भी इनकार नहीं करता है, न ही कर सकता है। स्वयं पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा था कि वर्तमान तत्त्व की प्रभावना में उसका (हुकमचंद भारिल्ल) बहुत बढ़ा योगदान है; पर आप अकेले ही तो नहीं हैं न ? लोगों को लगता है कि आप किसी की सुनते नहीं है, किसी को कुछ समझते ही नहीं हैं।

क्या नहीं समझते हैं ? वे जो हैं, हम उन्हें वही समझते हैं और फिर हम किसी को कुछ समझें या न समझें, इससे न तो उनका मोक्ष रुकता है और न ही हमारा, तब किसी को यह आग्रह क्यों है कि हम उन्हें समझें।

अनंत सर्वज्ञ परमात्मा तो सभी को सही तौर पर जानते और समझते हैं तब मात्र हमारे न जानने–समझने से क्या फर्क पड़ता है ?

तत्त्व के विषय में हमारे पास जिनवाणी है, पूर्ववर्ती ज्ञानियों द्वारा की गयी जिनवाणी की व्याख्यायें हैं, तर्क और युक्तियाँ हैं, अपनी बुद्धि और विवेक है।

यह कोई ऐसा विषय नहीं है कि किसी के तुष्टीकरण के लिए कुछ भी कह दिया जावे या स्वीकार कर लिया जावे।

इसका सम्बन्ध आत्म कल्याण से है, इसमें हमारा हित–अहित निहित है। इसमें किसी से कोई समझौता नहीं हो सकता है।

जहाँ तक व्यवस्था संबधी बातें है सो सब लोग अपने–अपने घर की व्यवस्थाएं अपने–अपने तरीके से चलाते हैं। इसमें किसी का हस्तक्षेप का दुराग्रह क्यों हो ?

अब और क्या रह जाता है, सुनने सुनाने के लिए ?

सच तो यह है कि हमारी रुचि काम करने में है, किसी से उलझने में नहीं। कोई हमारे काम में सहयोगी बने इसमें भला हमें क्या एतराज हो सकता है ? पर यदि किसी को सहयोग की कीमत चाहिए तो हम लेन–देन के क्षेत्र में नहीं हैं, हम व्यापारी नहीं हैं।

हम तत्त्वप्रचार कर रहे हैं, करना चाहते हैं और आपकी भी यही भावना है तो हम दोनों एक नाव पर सवार हैं, एक जैसे हैं, इसमें कौन उपकृत और कौन उपकारी ? आपने तत्त्वप्रचार में सहयोग देकर अपने विकल्प की पूर्ति की है और यदि कोई उपकार किया है तो समाज पर, हम पर नहीं। कदाचित् यह तो कह सकते हैं कि हमने आप पर उपकार किया है, आपकी भावना की पूर्ति में सहयोगी बनकर; क्योंकि आप तत्त्वप्रचार करना तो चाहते हैं, आपके पास पैसा है पर आप यह नहीं जानते कि इस पैसे का उपयोग तत्त्वप्रचार में किसप्रकार किया जावे उसमें हमने आपका सहयोग कर दिया; क्योंकि हमारे पास इस काम की दृष्टि है, टीम है।

फिर भी हम तो किसी के प्रति कोई शिकायत अपने मन में नहीं पालते; पर क्या आपकी शिकायत उचित है ?

हम यदि दुनियादारी छोड़कर इस क्षेत्र में आये हैं तो स्व–पर के कल्याण के लिए आये है, किसी के तुष्टीकरण के लिए नहीं, हमसे इसकी आशा–अपेक्षा रखना व्यर्थ है।

आपकी बात तो उचित लगती है पर जब लोग आपके बारे में तरह–तरह की बातें करते हैं, भ्रम फैलाते हैं तो आप उनका जवाब क्यों नहीं देते, मुझे लगता है कि आपके एक जवाब से ही सब भ्रम दूर हो जायेंगे। आप जवाब नहीं देते हैं तो लोग भ्रमित हो जाते हैं और कुछ लोग तो आपसे विमुख भी होने लगते हैं, मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो कल तक आपके भक्त थे, प्रशंसक थे; पर आज उनके मन में आपके प्रति अनेक शिकायतें हैं। मुझे लगता है कि यदि आप उनके भ्रम का निराकरण कर देंगे तो वे फिर आपके साथ हो जाएंगे।

तुम्हारी बात तो सही है पर हमारे पास समय तो सीमित ही है न, अब तुम क्या चाहते हो कि हम अपने लिखने पढ़ने का समय काट कर लोगों को सफाई देते फिरें ?

यदि एक–एक आदमी से व्यक्तिगत तौर पर संपर्क करें तो कितना समय चाहिए और यदि प्रवचन में करें तो उतना समय तत्त्वचर्चा में से कट जायेगा।

कोई हमसे जुड़ता है तो हमें क्या मिलता है और यदि कोई हमसे दूर जाता है तो हमारा क्या जाता है ?

हम किसी एक के कल्याण के लिए तो यह सब करते नहीं हैं, हम तो अपना लेखन, पठन–पाठन करते हैं, जिनकी होनहार अच्छी होगी, वे इससे जुड़ते जायेंगे और अन्य लोग टूटते जायेंगे। इसी का नाम कारवां है, कारवाँ बढ़ता रहेगा।

जिसकी होनहार अच्छी होगी, वह तो किसी की बातों में आकर तत्त्व छोड़ेगा नहीं और जिसकी नियति में भव–भ्रमण बाकी है, वह तो विमुख होने ही वाला है आज नहीं तो कल, इस नहीं तो उस निमित्त से।

सब जिम्मेदारी सिर्फ हमारी ही तो है नहीं। कुछ उनकी भी तो जिम्मेदारी है कि वे सत्य समझें और लोगों की बातों में न आयें। यदि उन्हें ही अपने हित–अहित की परवाह नहीं तो हम अकेले क्या कर सकते हैं ?

जो स्वयं अपनी बुद्धि से काम नहीं लेता, जो स्वयं सजग नहीं है, उसको तो लुटना ही है, उन्हें कौन बचा सकता है ?

बात सिर्फ उनके हित–अहित की ही नहीं है, इससे आपकी भी तो छवि खराब होती है ?

छवि की चिंता करने से छवि नहीं बनती और न बिगड़ती है। आपका जैसा व्यक्तित्व व कर्तृत्व है, तदनुरूप छवि निर्मित होती है। तुम यदि यह समझते हो कि एक व्यक्ति सारे जीवन अपने मिशन में जुटा रहता है और कोई आकर अचानक एक दिन उसकी छवि बना या बिगाड़ देगा तो यह भ्रम है और यदि ऐसा होता है तो फिर इसकी क्या परवाह करनी, इतनी भंगुर वस्तु की क्या चिंता करनी। वैसे जनता बहुत समझदार है, वह यूं ही किसी की बातों में नहीं आ जाती, लोग तत्त्व समझें या न समझें इस दुनियादारी में सभी बहुत होशियार हैं।

जब कोई किसी के पास जाकर हमारी बुराई करता है तो लोग उसकी बातों में आसानी से नहीं आ जाते, वे हमारे बारे में तो निर्णय हमें देखकर करते हैं, हाँ वे उस बुराई करने वाले के बारे में जरूर जान जाते हैं कि वह कैसा है ? उसमें कितनी द्वेष बुद्धि भरी है और समाज के वातावरण को विषाक्त करने में उसका कितना योगदान है। अनेक लोगों से तो उनको मुंहतोड़ जवाब मिलता है।

हमसे अधिक उन लोगों का नुकसान होता है, जो लोग हमारी छवि बिगाड़ने का प्रयास करते हैं।

लोग आपके पास आते हैं और कहते हैं कि फलां व्यक्ति ऐसा गलत काम कर रहा है, लोग उसे आपका आदमी समझते हैं, इससे आपकी बदनामी होती है, आप लोगों को बतला दो कि उसका हमसे कोई संबंध नहीं है।

अब हम किस–किस का हिसाब किताब रखें ? पर वह स्वंय ही अपने आचार–विचार व्यवहार से लोगों को बतला देता हे कि वह हमारा नहीं है। जब वह हमारी बुराई करता है तो लोग कम से कम उसके बारे में तो जान जाते हैं कि वह हमारा आदमी नहीं है। हमें इस बात की घोषणा करने की क्या जरूरत है?

यह सब तो ठीक है पर फिर भी जब वे लोग इतना सब कुछ करते हैं तो आपको इस ओर थोड़ा तो ध्यान देना ही चाहिए न ?

भैया ! हमारे पास करने को बहुत महत्वपूर्ण काम हैं, बहुत कुछ है करने को, अगाध जिनवाणी का मर्म समझना है, प्रकट करना है, जितना बन सके इस छोटे से जीवन में कर लें तो न जाने आगामी कितने लम्बे काल तक कितने लोगों के कल्याण में निमित्त बनेगा।

उनके पास करने को और कुछ है नहीं, दिन–रात बस एक यही काम है, दिन रात द्वेष में जलते रहते हैं, सोते जागते सिर्फ एक ही चिंतन चलता रहता है, अपनी आत्मा को छोड़कर मात्र हमारा ही ध्यान करते हैं।

उन्हें सामान्य जनता से भी कोई सरोकार नहीं है, बस वे तो इतने विशाल समुदाय में से उन लोगों का चुनाव कर लेते हैं, जिनसे उन्हें कोई लाभ हो सकता है और फिर अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं, उसका ब्रेन वाश करने में।

अब मानलो पूरे समाज में से उन्होंने ऐसे 100–200 लोगों का चुनाव कर लिया, अब 12 महीने 24 घंटे एक ही तो काम है उन लोगों के कान भरने का। कदाचित् वे लोग भी 24 घंटे के इस आक्रमण को नहीं सह पाते और संक्रमित हो जाते हैं।

आज आपको जो लोग इन कामों में लिप्त दिखाई देते हैं। जरा उनका इतिहास तो उठाकर देखो, जीवनभर उन्होंने क्या किया है ? बस यही राग–द्वेषभरी और राग–द्वेष फैलानी वाली विध्वंसक गतिविधियों में ही तो लिप्त रहे हैं। कभी किसी के विरुद्ध कभी किसी के, अब आज हमारा नंबर है।

वे भी तत्त्वप्रेमी कहलाते हैं। समाज में सक्रिय रहते सारा जीवन बीत गया है। जरा बतलाएं तो सही कि मूल तत्त्वप्रचार के लिये उन्होंने क्या किया है? क्या धर्म के नाम पर लड़ना, लोगों को लड़ाना, द्वेष फैलाना और एक आदमी जो शान्ति से दिन–रात एक मात्र तत्त्व चिंतन, पठन–पाठन, लेखन, प्रवचन में लगा हुआ है, उसके मार्ग में रोड़े अटकाना, इसके अलावा और क्या उपलब्धियाँ है इनकी। अब तुम हमसे ये अपेक्षा रखते हो कि हम भी उसी जमात में शामिल हो जाएं, जो वे कर रहे हैं, हम भी वही करें ?

ठीक है आप अपना काम करते रहो, पर आप अकेले थोड़े ही हो, आपके पास एक विशाल सेना है 600 से अधिक आपके शिष्य शास्त्री विद्वान हैं, हजारों शिक्षक हैं, प्रवचनकार हैं, अन्य मुमुक्षु हैं; वे आपकी ओर से यह काम कर सकते हैं, बस आपके एक आदेश की जरूरत है।

तुम उन्हें क्या समझते हो ? वे आत्मार्थी हैं, मुमुक्षु हैं, वे आत्मकल्याण के लिए यहाँ आए हैं, तुम चाहते हो कि यहाँ फिर हम उन्हें उसी गोरखधंधे में लगा दें, जिसे बड़ी मुश्किल से वे छोड़कर आये हैं ?

तब फिर इनमें और उनमें क्या फर्क रहेगा ?

अरे ! हमने उन्हें गणधर की गादी संभालने के लिये तैयार किया है, ये गंदगी फैलाने के लिए नहीं।

मैं अपने प्रत्येक शिष्य से भी वही अपेक्षा रखता हूँ जो मैं स्वयं करता हूँ।

मेरे पास दो पैमाने नहीं हैं। मैंने उन्हें यही सिखाया है।

किसी भी हालत में अपने लक्ष्य से, अपने मार्ग से च्युत नहीं होना, निडरता, निरीहता, स्वाभिमान।

तुम चाहते हो इन्हें मैं इस राग–द्वेष की भट्टी में झोंक दूं ?

अरे ! मैं तो चाहता हूँ कि यदि इनके मुख से एक शब्द निकले तो वह ''आत्मा'' हो, यदि एक वाक्य निकले तो वह आत्म कल्याणकारी हो। आते हैं, हमारे पास ऐसे भी बहुत आते हैं तुम्हारे जैसे कि ''आप हमें आज्ञा तो दो, हम ऐसा कर देंगे–वैसा कर देंगे, ईंट से ईंट बजा देंगे, सारे देश को हिला देंगे। हम तो सबसे यही कहते हैं कि यह सब कुछ नहीं करना है, बस स्वाध्याय करो और हो सके तो प्रवचन करो, पाठशाला चलाओ, शिविर लगाओ बस।

अरे ! इस मार्ग में आकर भी यही करोगे – झगड़ा, झंझट ?

नहीं मैं इन युवकों को, इन बच्चों को इस आग में नहीं झोंक सकता। मैं तो उनको यही समझाता हूँ और समझाता रहूँग कि इन प्रपंचों से दूर ही रहो, रचनात्मक कार्य करो; उससे आत्महित और परहित साथ–साथ होगा।

मैं तो मानता हूँ कि किसी न किसी तरह से इन सब बातों का जवाब तो दिया ही जाना चाहिए।

दे तो रहे हैं न जवाब और कैसे जवाब दिया जाता है ?

अब हम हर साल पहले से दुगुना साहित्य लिखते हैं, पहले से दुगुने विद्यार्थी महाविद्यालय में भर्ती करते हैं, दुगुने विद्वान तैयार करते हैं, पहले से अधिक शिविर लगाते हैं और कैसे दिया जाता है जवाब ?

प्रतिदिन तत्त्व प्रेमियों और अभ्यासियों की संख्या बढ़ती ही जाती है, भ्रमवश होने वाला विरोध बंद हो गया है, समाज में शान्ति, सहिष्णुता और सद्भाव की स्थापना हुई है। लोगों ने हमारे दृष्टिकोण को समझा है और मान्यता प्रदान की है, अब और क्या चाहिए ?

बस थोड़ा सा समय शेष है इस जीवन का, फिर कौन कहाँ होगा, एक दूसरे से कोई सरोकार ही नहीं रहेगा। यह वियोग अनन्तकाल के लिये होगा। हमारा आदर्श तो बनारसीदासजी का यह पद है –

हम बैठे अपनी मौन सौं।
दश दिन के मेहमान जगत में, बोलि विगारै कौन सों।
हम बैठे अपनी मौन सौं।

●

जैन तिथि दर्पण 2012

जैन तिथि दर्पण

2012

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 2 सितम्बर 2011 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 22 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 10 अगस्त 2011 तक हमारे पास 415 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 10 अगस्त 2011 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 340 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है –

विशिष्ट विद्वानों में – 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा **2.मुम्बई (भायंदर–वेस्ट) :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर **3.जयपुर (स्मारक भवन) :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर **4.बड़नगर :** डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी **5.भिण्ड (परमागम मंदिर) :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर **6.सोनागिरजी :** पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन सोनागिरि **7.वस्त्रापुर–अहमदाबाद :** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियाँधाना **8.जयपुर (आदर्श नगर) :** ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री खनियाँधाना **9.गजपंथा :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर **10.मुम्बई (मलाड) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली **11.जयपुर :** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर **12.शिरूर :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' **13.राजकोट :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली **14.सोलापुर :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **15. अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, **16. भोपाल (कोहेफिजा) :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर **17. देवलाली :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर **18.मुम्बई (बोरीवली) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर **19. 20. औरंगाबाद :** पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, विदुषी डॉ. उज्ज्वला शहा मुम्बई **21.इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड **22.आगरा :** ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल **23.ललितपुर :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर **24.कोलकाता :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम बांसवाड़ा।

विदेश में – 1.कनाडा : ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली, **2.लंदन :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **3.सॉन्फ्रान्सिस्को :** डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, **4.नैरोबी :** पण्डित शैलेषभाई तलोद, **5.नैरोबी :** पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा **6.बैंकॉक :** पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री बरेलीवाले इन्दौर।

मध्यप्रदेश प्रान्त

1. अशोकनगर : पण्डित देवेन्द्रकुमार बिजौलिया, **2. अम्बाह :** पण्डित कस्तूरचंदजी बजाज भोपाल, **3. भोपाल (कस्तूरबा नगर) :** डॉ. महेश शास्त्री गुढ़ावाले, **4. भोपाल (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित श्रेणिकजी जैन जबलपुर, **5. भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित चैतन्य शास्त्री कोटा, **6. रायपुर (शंकरनगर) :** पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, **7. बीड :** पण्डित माधवजी शास्त्री शाहगढ, **8. छिन्दवाड़ा :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री नागपुर, **9. मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र :** पण्डित राजूभाई जैन कानपुर, **10.ग्वालियर (फाल्केबाजार) :** ब्र. सुनीलकुमारजी शास्त्री शिवपुरी, **11.ग्वालियर (थाटीपुर) :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन, **12. हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी जैन, **13. इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, **14. इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, **15. इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित नीलेशभाई शाह, मुम्बई, **16. इन्दौर (माणकचौक) :** पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, **17. जबलपुर (मुमुक्षु मंडल) :** ब्र. वासन्तीबेन देवलाली, **18.करेली :** पण्डित अभिषेक जैन उभेगांव, **19. केसली :** पण्डित रूपचन्दजी जैन बंडा, **19.20. मौ :** ब्र.अल्काबेन भिण्ड, ब्र.अर्चनाबेन भिण्ड, **21. शुजालपुर मण्डी :** पण्डित पद्मचंदजी गंगवाल इन्दौर, **22.शिवपुरी– छतरी रोड़ (शान्तिनाथ जिनालय) :** पण्डित अभयकुमारजी जैन, बदरवास, **23. सिंगोली :** पण्डित राजेशजी शास्त्री, **24. घोड़ा डूँगरी :** पण्डित सुरेशचंदजी शास्त्री, **25. मन्दसौर (गोल चौराहा नई आबादी) :** डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर, **26. बीना :** पण्डित सचिन जैन अकलूज खनियाधाना, **27. बण्डा बेलइ :** ब्र. रविकुमारजी ललितपुर, **28. धामनोद :** पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, **29. इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पण्डित नेमीचन्दजी ग्वालियर, **30. इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित अनिलजी इंजी. भोपाल, **31.जावरा :** पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया सागर, **32. जबेरा :** ब्र. विमलाबेन जयपुर, **33. खुरई :** पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, **34. कुचडौद :** पण्डित विमलचंदजी जैन लाखेरी, **36. गौरमी :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री सेमारी, **35. सिलवानी :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी पिपरई, **36. टीकमगढ़ :** ब्र. अमित भैया विदिशा, **37. विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित निर्मलकुमारजी जैन सागर, **38. मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित महेशचन्दजी जैन ग्वालियर : **39. सोनागिर :** डॉ. विनोद शास्त्री चिन्मय विदिशा, **40.सोनागिर :** डॉ. मुकेश शास्त्री तन्मय विदिशा, **41.सोनागिर :** पण्डित मांगीलालजी जैन कोलारस, **42. सोनागिर :** पण्डित लालजीरामजी जैन विदिशा, **43. रतलाम :** पण्डित विनोदजी जबेरा, **44. सनावद :** पण्डित आकेशजी छिंदवाड़ा, **45. सूखा निसईजी (दमोह) :** पण्डित कपूरचन्दजी समैया सागर, **46. सागर (मकरोनिया) :** पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, **47. सिंगोली :** पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, **48. भोपाल (कोहेफिजा) :** विदुषी प्रतीति पाटील, **49. इन्दौर :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, **50.गोरमी :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री सेमारी, **शिवपुरी :** ब्र. पुष्पाबेन, ब्र. ज्ञानधारा झांझरी उज्जैन, **48. खनियांधाना :** पण्डित अरुणजी मोदी सागर, **49. ग्वालियर (सोडा का कुआ) :** पण्डित सतीशजी जैन पिपरई, **50. राघौगढ़ :** पण्डित शीतलजी पाण्डे उज्जैन, **51. अकाझिरी**

: पण्डित सनतजी शास्त्री बकस्वाहा, **52. आरोन :** विदुषी पुष्पा जैन खंडवा, **53. शाहपुर (बुरहानपुर) :** पण्डित फूलचन्दजी हिंगोली, **54.रहली :** पण्डित शैलेषजी शास्त्री ध्रुवधाम, **55. शहडौल :** पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी, **56. सागर (तारनतरन) :** पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, **57. ग्वालियर (मुरार) :** पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री, **58. गढ़ाकोटा :** पण्डित अरुणजी मड़वैया बानपुर, **59. इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, **60.कोलारस (चौधरी मौहल्ला) :** पण्डित धवलकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम, **61. कोलारस (होटल फूलराज) :** पण्डित निशांतकुमारजी शास्त्री वारासिवनी, **63. बदरवास :** ब्र. सुकुमाल झांझरी उज्जैन, **64.गौरझामर :** पण्डित जिनेन्द्रजी जैन जबलपुर, **65. जबलपुर (रांझी) :** पण्डित राहुल जैन रानीपुर, **66. बेतूल :** पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना, **67. शाहगढ़ :** पण्डित कैलाशचंदजी महरौनी, **68.उज्जैन :** पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर, **69. सिवनी :** पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन, **70. इन्दौर (विजयनगर) :** पण्डित पदमजी अजमेरा, **71. भोपाल (11 सौ क्वार्टर्स) :** पण्डित सुरेशचंदजी सिंघई इंजी. भोपाल, **72. करैरा :** पण्डित किशनजी जैन कोलारस, **73. इन्दौर (लश्करी गोठ) :** पण्डित संजय शास्त्री दौसा, **74. गुना (शान्तिनाथ मन्दिर) :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, **75. जावर (सिहोर) :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री मड़देवरा, **76. बड़गाँव :** पण्डित वैभवजी शास्त्री बांसवाड़ा, **77. चन्देरी :** पण्डित रमेशचन्दजी बांझल, इन्दौर, **78. नरवर :** पण्डित बाबूलालजी वैद्य खुरई, **79. पंधाना :** पण्डित हुकमचन्दजी सिंघई राघौगढ़, **80. अमलाई :** पण्डित आशीषजी शास्त्री कोटा, **81.बेरसिया :** पण्डित सरदारमलजी जैन, **82. होशंगाबाद :** पण्डित निकलेशजी शास्त्री दलपतपुर, **83. उदयपुरा :** पण्डित शेषकुमारजी उभेगांव छिंदवाडा, **84. ग्वालियर :** पण्डित विकासजी शास्त्री खनियांधाना, **85. सुसनेर :** पण्डित मुरालीलालजी जैन नरवर, **86.दलपतपुर :** पण्डित सुनीलकुमारजी देवरी, **87. इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित विकासजी छाबड़ा, **88. निसईजी (मल्हारगढ) :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री देहगांव, **90. निसईजी (मल्हारगढ) :** पण्डित रतनलालजी जैन होशंगाबाद, **91. निसईजी (मल्हारगढ) :** विदुषी पुष्पाबेन होशंगाबाद, **92. छिंदवाडा (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पण्डित कमलकुमारजी जैन जबेरा, **93. कालापीपल :** पण्डित महेन्द्रकुमारजी सेठी, **94. गोहद :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी जैन सागर, **95. अमायन :** ब्र. महेन्द्रकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, **96. अमायन :** पण्डित सचिनजी मोदी खनियांधाना, **97. मौ :** पण्डित मुकेशजी कोठादार , **98. घुवारा :** पण्डित अपूर्वजी शास्त्री, इटावा।

महाराष्ट्र प्रान्त

1. जलगाँव : पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, **2. मुम्बई (विक्रोली) :** पण्डित किशोरजी शास्त्री रहटगांव, **3. मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** पण्डित जिनचंदजी शास्त्री कोल्हापुर, **4. मुम्बई (दादर) :** पण्डित संजय शास्त्री जेवर, **5. मुम्बई – घाटकोपर (वे.) :** पण्डित अभिषेक शास्त्री गजपंथा, **6. मुम्बई – मलाड (ईस्ट) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **7. मुम्बई – मलाड वेस्ट (एवरशाइन नगर) :** डॉ. महावीर प्रसादजी शास्त्री उदयपुर, **8. मुम्बई – बोरीवली :** पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर, **9. मुम्बई – दहिसर :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुंबई, **10.नागपुर :** ब्र. नन्हेभैया सागर, **11. वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा, **12. मलकापुर :** पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री अहमदाबाद, **13. एलोरा :** पण्डित गुलाबचंदजी शास्त्री गोवर्धन, **14. जयसिंगपुर :** पण्डित विजयसेन शास्त्री आलते : **15. गजपंथा :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **16. मुम्बई (बसई) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा, **17. मुम्बई :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री आगरा, **18.मुम्बई :** पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई,**19. मुम्बई :** पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, **20. नातेपुते :** पण्डित शीतल रायचंद दोशी, **21. शिरडशहापुर :** पण्डित प्रशान्त काले शास्त्री राजुरा, **22. सेलू :** पण्डित चिन्मय शास्त्री पिडावा, **23. पुणे (स्वाध्याय मंडल)** : विदुषी राजकुमारी बेन दिल्ली, **24. हिंगोली :** पण्डित विवेक जैन छिंदवाडा, **25. चिखली (महावीर मन्दिर) :** पण्डित स्वप्निलजी जैन ध्रुवधाम, **26. कोल्हापुर :** पण्डित अमोलकुमारजी शास्त्री कोल्हापुर, **27. मालशिरस :** पण्डित चंदनमलजी शाह नातेपुते, **28. वर्धा :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम, **29. कारंजा :** डॉ. आर.के.बंसल अमलाई, **30. चिखली (आदिनाथ मंदिर):** पण्डित विजयकुमारजी राउत, **31.बैलोरा :** पण्डित शांतिकुमारजी देगांवकर कलमनुरी, **32. मुम्बई (अन्धेरी) :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, **33. मुम्बई भायंदर (जैसल पार्क) :** पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली, **34. फलटन :** पण्डित सनतजी शास्त्री रूकडी, **35. हेरले :** पण्डित अनिलजी शास्त्री आलमान, **36.तमदलगे :** पण्डित अमोलजी शास्त्री पाटील, **37. मलकापुर (कोल्हापुर) :** पण्डित महेशजी शास्त्री, **38. कोल्हापुर (शाहुपुरी) :** पण्डित भरतजी शास्त्री बाहुबली, **39. दानोली :** पण्डित किरणजी पाटील, **40. सांगली :** पण्डित प्रसन्न शेटे शास्त्री कोल्हापुर, **41. हेरले :** पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री ध्रुवधाम, **42. सेनगांव :** पण्डित विपुलजी शास्त्री जयपुर, **43. बडगांव :** पण्डित शीतलजी शास्त्री आलमान हेरले, **44. कोथळी :** पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील मलकापुर **45. कोल्हापुर (रुइकर कॉलोनी) :** पण्डित शीतलजी हेरवाडे शास्त्री, **46.अक्कलकोट** : पण्डित चेतनजी शास्त्री, **47. नागपुर :** पण्डित मनीषजी सिद्धांत, **48.नागपुर :** पण्डित सुकुमारजी शास्त्री शिरदवाड़, **49. नागपुर :** पण्डित रवीन्द्रजी महाजन शास्त्री बीड, **50. गजपंथा :** पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल।

उत्तरप्रदेश प्रान्त

1.2. बड़ौत : पण्डित शौर्यजी मंडाना एवं पण्डित दीपकजी सेमारी बांसवाड़ा, **3. खतौली :** डॉ. नेमिचंदजी शास्त्री खतौली, **4. भौगाँव :** पण्डित धनेन्द्र सिंघल ग्वालियर, **5. कुरावली :** पण्डित प्रकाशचंदजी मैनपुरी, **6. कायमगंज :** पण्डित विमलचन्दजी जैन जलेसर, **7. मेरठ**

(तीरगरान) : पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना, 8. **जेतपुर कलां :** पण्डित अजितकुमारजी मडावरा, 9. **मैनपुरी :** पण्डित विनोदकुमारजी गुना, 10. **रूडकी :** पण्डित सनतजी शास्त्री ध्रुवधाम, 11. **शिकोहाबाद :** पण्डित पुष्पेन्द्रजी जैन बानपुर, 12. **एत्मादपुर :** पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर, 13. **अमरोहा :** पण्डित गोकुलचंदजी सरोज ललितपुर, 14. **गुरसराय :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा : 15. **कानपुर (किदवई नगर) :** पण्डित मनोजी शास्त्री अभाना, 16. **मुजफ्फरनगर :** पण्डित अजितकुमारजी फिरोजाबाद, 17. **सहारनपुर :** पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, 18. **शैरकोट :** पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री धामपुर, 19. **सुलतानपुर चिलकाना :** पण्डित चन्द्रलालजी जैन कुशलगढ, 20. **खेकड़ा :** विदुषी प्रमिलाबेन इन्दौर, 21. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडावाले, 22. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री अलवर, 23. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित सुधीरकुमारजी शास्त्री जबलपुर, 24. **कुरावली :** पण्डित संतोष सावजी शास्त्री, 25. **खतौली (कानूनगोयान) :** पण्डित संजयजी अजनौर, 26. **गंगेरू :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, 27. **कानपुर (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित सतीशजी जैन कारंजा, 28.**झांसी :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ।

गुजरात प्रान्त

1. **बडौदरा :** पण्डित मनीष शास्त्री खतौली, 2. **नरौड़ा-अहमदाबाद :** पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना, 3. **अहमदाबाद (मणिनगर) :** पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर, 4. **अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री खनियाधाना, 5. **भावनगर :** पण्डित मीठाभाई दोशी हिम्मतनगर, 6. **दाहौद :** पण्डित नागेशजी पिडावा, 7. **हिम्मतनगर :** पण्डित अनुभव शास्त्री कानपुर, 8. **अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, 9. **मौरवी :** मंगलार्थी अभिषेक जैन सिहोर, 10. **अहमदाबाद (पार्श्वनाथ चैत्यालय-रामेश्वर पार्क) :** पण्डित ज्ञाना झांझरी उज्जैन, 11. **चैतन्यधाम - अहमदाबाद :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, 12. **वापी :** पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, 13. **अहमदाबाद पालडी :** पण्डित मेहुलजी मेहता कोलकाता, 14.**जहैर :** पण्डित विवेकजी शास्त्री भिण्ड, 15. **ओढव :** पण्डित दीपकजी कोठडिया अहमदाबाद, 16. **जैतपुर :** पण्डित नकुलजी शास्त्री जयपुर।

राजस्थान प्रान्त

1-27. **जयपुर :** डॉ.श्रेयांसकुमारजी शास्त्री, पण्डित रमेशचंदजी लवाण, डॉ. भागचंदजी जैन बड़ागांव, डॉ. नीतेशजी शाह डडूका, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित परेशजी शास्त्री अरथुना, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित गजेन्द्रजी बड़ामलहरा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित ज्ञानचंदजी शास्त्री कुडीला, पण्डित चन्द्रप्रभातजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित अनिलजी शास्त्री सोजना, पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अरहन्तवीरजी शास्त्री फिरोजाबाद, पण्डित विजयजी मोदी शास्त्री, पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ, पण्डित अभिजीतजी पाटील कोल्हापुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित संतोषजी शास्त्री बकस्वाहा, श्रीमती कमला भारिल्ल जयपुर, 28. **अजमेर :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 29. **बूँदी (मल्लाशाह मंदिर) :** पण्डित धर्मचंदजी जयथल, 30. **कोटा (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित मनोजजी शास्त्री करेली, 31. **रावतभाटा :** पण्डित संजयजी शास्त्री हरसौरा, 32. **उदयपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 33. **उदयपुर (से.-3) :** पण्डित राजीव शास्त्री थानागाजी, 34. **उदयपुर (से.-11) :** पण्डित नितुलजी शास्त्री इन्दौर, 35. **उदयपुर- गायरियावास :** पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री जयपुर, 36. **बिजौलिया :** पण्डित आशीषजी शास्त्री भिण्ड, 37. **लूणदा :** पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री बकस्वाहा, 38. **उदयपुर (केशवनगर) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री झामरकोट, 39. **बाँसवाड़ा (खांदू कालोनी) :** पण्डित चन्द्रसेनजी जैन, 40. **बाँसवाड़ा (ध्रुवधाम):** पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ, 41 **शहाबाद :** पण्डित भगवती शास्त्री समरानिया, 42. **कोटा (इन्द्रविहार) :** पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, 43. **भीलवाड़ा :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, 44. **बीकानेर :** पण्डित रामनरेशजी शास्त्री लाडनूं, 45. **कुशलगढ (आदिनाथ) :** पण्डित सुमितजी शास्त्री भिण्ड, 46. **पिड़ावा :** ब्र. कल्पनाबेन जयपुर, 47. **उदयपुर (सन्मति भवन) :** पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री भीण्डर, 48. **चित्तौड़गढ (कुम्भानगर) :** पण्डित पलाशजी शास्त्री डडूका, 49. **जौलाना :** पण्डित रजतकांतजी शास्त्री खनियांधाना, 50. **भीण्डर :** पण्डित मिश्रीलालजी जैन केकड़ी, 51. **अलीगढ :** पण्डित पदमकुमारजी कटारिया केकड़ी, 52. **कूण :** अमितेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, 53. **कुरावड़ :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री दिल्ली, 54. **झालीजी का बराना :** पण्डित आशीषजी शास्त्री महाजन, 55. **कानौड़ :** पण्डित संदीपजी शास्त्री शहपुरा, 56. **वैर :** पण्डित अनुपमजी शास्त्री भिण्ड, 57. **देवली :** पण्डित शशांकजी शास्त्री सागर, 58. **सांकरोदा :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री चिनौआ, 59. **पीसांगन :** पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर, 60. **जयपुर (शक्तिनगर) :** पण्डित जयेश शास्त्री उदयपुर, 61. **टोकर :** पण्डित मयंकजी शास्त्री भिण्ड, 62. **जयथल :** पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, 63. **वल्लभनगर :** पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, 64. **अलवर :** पण्डित प्रेमचन्दजी शास्त्री, 65. **अलवर (60 फीट रोड़) :** पण्डित अजितजी शास्त्री फुटेरा, 66. **कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, 67. **कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित सौरभ शास्त्री गढाकोटा, 68. **बेगू :** पण्डित नियमजी शास्त्री सिलवानी, 69. **सेमारी :** पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक, 70. **निवाई :** पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री केवलारी, 71. **झालरापाटन :** पण्डित विक्रान्तजी शास्त्री पाटनी झालरापाटन, 72. **प्रतापगढ :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री निम्बाहेड़ा, 73. **अजमेर :** पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, 74. **कोटा (रामपुरा) :** पण्डित समकितजी शास्त्री टोंक ध्रुवधाम, 75.

(शेष पृष्ठ १२ पर...)

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

80 इक्कीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रथमानुयोग में अलंकार शास्त्र की व काव्यादि शास्त्रों की पद्धति मुख्य है, करणानुयोग में गणित आदि शास्त्रों की पद्धति मुख्य है, चरणानुयोग में सुभाषित नीतिशास्त्रों की पद्धति मुख्य है और द्रव्यानुयोग में न्यायशास्त्रों की पद्धति मुख्य है।

यद्यपि जैनदर्शन में अधिकांश शास्त्र तो इन चार अनुयोगों में गर्भित हो जाते हैं; तथापि इनके अतिरिक्त न्याय, छन्द, कोश, वैद्यक, ज्योतिष, मंत्रादि शास्त्र भी जैनमत में पाये जाते हैं।

उक्त शास्त्रों का स्वाध्याय करने या न करने के संबंध में जो मार्गदर्शन पण्डितजी ने दिया है; वह इसप्रकार है –

''भाषा तो अपभ्रंशरूप अशुद्धवाणी है, देश–देश में और–और हैं; वहाँ महन्त पुरुष शास्त्रों में ऐसी रचना कैसे करें ?

तथा व्याकरण–न्यायादि द्वारा जैसे यथार्थ सूक्ष्म अर्थ का निरूपण होता है, वैसी सीधी भाषा में नहीं हो सकता; इसलिए व्याकरणादिक की आम्नाय से वर्णन किया है। सो अपनी बुद्धि के अनुसार थोड़ा–बहुत इनका अभ्यास करके अनुयोगरूप प्रयोजनभूत शास्त्रों का अभ्यास करना।[1]

यहाँ इतना है कि ये भी जैनशास्त्र हैं – ऐसा जानकर इनके अभ्यास में बहुत नहीं लगना। यदि बहुत बुद्धि से इनका सहज जानना हो और इनको जानने से अपने रागादिक विकार बढते न जाने, तो इनका भी जानना होओ। अनुयोगशास्त्रवत् ये शास्त्र बहुत कार्यकारी नहीं हैं; इसलिए इनके अभ्यास का विशेष उद्यम करना योग्य नहीं है।[2]**''**

यदि ऐसी बात है तो हम इन्हें पढे ही क्यों ? – इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा व्याकरण–न्यायादिक शास्त्र हैं, उनका भी थोड़ा–बहुत अभ्यास करना; क्योंकि उनके ज्ञान बिना बड़े शास्त्रों का अर्थ भासित नहीं होता। तथा वस्तु का स्वरूप भी इनकी पद्धति जानने पर जैसा भासित होता है, वैसा भाषादिक द्वारा भासित नहीं होता; इसलिए परम्परा कार्यकारी जानकर इनका भी अभ्यास करना; परन्तु इन्हीं में फँस नहीं जाना। इनका कुछ अभ्यास करके प्रयोजनभूत शास्त्रों के अभ्यास में प्रवर्तना।

तथा वैद्यकादि शास्त्र हैं, उनसे मोक्षमार्ग में कुछ प्रयोजन ही नहीं है; इसलिए किसी व्यवहारधर्म के अभिप्राय से बिना खेद के इनका अभ्यास हो जाये तो उपकारादि करना, पापरूप नहीं प्रवर्तना और इनका अभ्यास न हो तो मत होओ, कुछ बिगाड़ नहीं है।[1]**''**

अरे, भाई ! यदि आपकी उम्र हो गई है तो न्याय–व्याकरणादि में समय खराब नहीं करना ही समझदारी है; किन्तु यदि अभी किशोरावस्था ही है तो इनका थोड़ा–बहुत अभ्यास अवश्य करना।

जरा, विचार तो करो ! कोई व्यक्ति अपनी माँ की भाषा ही न जाने और अपनी माँ से बात करने के लिए भी उसे दुभाषिया की आवश्यकता पड़े – इससे बड़ा दुर्भाग्य जगत में और कौन होगा ?

जिनवाणी भी हमारी माता है और वह मूलत: तो प्राकृत–संस्कृत में ही है। उसे समझने के लिए हमें जीवन भर दूसरों का मुँह ताकना पड़े, पण्डितों के भरोसे रहना पड़े – यह कोई अच्छी बात नहीं है।

अत: यदि अभी किशोरावस्था ही है तो वर्ष–दो वर्ष प्राकृत–संस्कृत भाषा सीखने में लग जावें तो कोई हानि नहीं है।

इसीप्रकार न्यायशास्त्र पढे बिना वस्तुस्वरूप को तर्क की कसौटी पर कसना संभव नहीं है। उसके बिना तत्त्वनिर्णय में दृढता नहीं आती; इसलिए **नई उम्रवालों को थोड़ा–बहुत न्यायशास्त्रों का अभ्यास करना भी अनुपयुक्त नहीं है, उपयोगी ही है; परन्तु न्याय–व्याकरण में जीवन लगा देना तो किसी को भी उपयुक्त नहीं है।**

पण्डित टोडरमलजी ने स्वयं उपयोगी समझकर आवश्यकतानुसार थोड़ा–बहुत न्याय–व्याकरण शास्त्रों का अभ्यास किया था और शेष जीवन करणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग के शास्त्रों के पठन–पाठन में बिताया, अध्यात्मशास्त्रों के स्वाध्याय में लगाया। वे यही सलाह हमें और आपको दे रहे हैं। वे उन पण्डितों में से नहीं थे, जो लोग जगत को जो रास्ता बताते हैं; उस पर स्वयं नहीं चलते।

इसप्रकार चार अनुयोगों की कथन पद्धति और प्रयोजन को समझाया। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २८७ २. वही, पृष्ठ २८८

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९४

शोक समाचार

1. **मेरठ निवासी श्री अरविन्दकुमारजी जैन** लघुभ्राता श्री सुशील कुमार जैन (किताब वाले) का शान्तपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में साहित्य की कीमत कम करने हेतु 5100/– रुपये प्राप्त हुये।

2. **हिम्मतनगर (गुज.) निवासी श्रीमती कोकिलाबेन साकरचन्द शाह** का दिनांक 1 जुलाई को 75 वर्ष की उम्र में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 200–200/– रुपये प्राप्त हुये।

3. **विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री कोमलचंदजी जैन** का दिनांक 16 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बड़े ही सरल, शांत, तत्त्वरुचिवंत एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500–500/– रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों – यही भावना है।

(पृष्ठ १० का शेष ...)

लाखेरी : पण्डित अमितजी शास्त्री कोटा ध्रुवधाम, **76. अलवर (आदिनाथ मंदिर) :** पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री कारंजा ध्रुवधाम।

दिल्ली व अन्य प्रांत

1.2. कोलकाता : पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं डॉ. ममता जैन, **3. बैंगलोर :** पण्डित अरहन्तप्रकाश झांझरी उज्जैन, **4. एरनाकुलम :** पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, **5. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी : **6. दिल्ली (विश्वासनगर) :** पण्डित सुदीपकुमारजी जैन बीना, **7. दिल्ली :** पण्डित श्री कैलाशचन्दजी शास्त्री बीकानेर, **8. दिल्ली (शिवाजी पार्क) :** पण्डित श्री सुरेशजी टीकमगढ़ : **9. दिल्ली (इन्द्रपुरी/जनकपुरी बी 1) :** पण्डित मधुबनजी शास्त्री मुजफ्फरनगर, **10. भागलपुर :** पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, **11.बेलगांव :** पण्डित संजयजी शास्त्री सेठी जयपुर, **13. दिल्ली :** पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा, **14. दिल्ली (धरमपुरा) :** पण्डित ऋषभजी जैन शास्त्री ललितपुर, **15. दिल्ली :** पण्डित निपुणजी शास्त्री सरदारशहर, **16. दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट) :** पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **17. दिल्ली (बहादुरगढ) :** पण्डित बसन्तजी शास्त्री जयपुर, **18. दिल्ली (पीरागढी) :** पण्डित प्रीतमजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **19. दिल्ली (पालमगांव) :** पण्डित रॉकीजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **20.दिल्ली (कैंट) :** पण्डित नीरजजी शास्त्री (ध्रुवधाम), **21.दिल्ली (ग्रीन पार्क) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, **22. दिल्ली (लॉरेन्स रोड़) :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, **23. दिल्ली (रोहिणी) :** पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली, **24. दिल्ली (सरस्वती विहार) :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री (शाहगढ़) दिल्ली, **25. दिल्ली (कालकाजी) :** पण्डित संजीवजी जैन उस्मानपुर, **26. दिल्ली (सैनिक फार्म) :** विदुषी श्रुति जैन शास्त्री जयपुर, **27. दिल्ली (जवाहरपार्क) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री (सागर) दिल्ली, **28. देहरादून (विकासनगर) :** पण्डित अशोककुमारजी उज्जैन, **29. लुधियाना :** पण्डित अंकित शास्त्री लूणदा, **30. श्रवणबेलगोला (लोहारिया यात्रा संघ) :** पण्डित संजयजी शास्त्री अरथूना, **31. दिल्ली (बिनौली) :** ब्र. सुधाबेनजी छिन्दवाड़ा, **32. दिल्ली (पाण्डव नगर) :** पण्डित जयदीपजी शास्त्री डडूका, **33. दिल्ली (जनकपुरी सी-2) :** पण्डित मयंकजी शास्त्री गढी, **34. दिल्ली (शंकर रोड़-राजेन्द्रनगर) :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री आंजना, **35. दिल्ली (बुधविहार) :** पण्डित मेघवीरजी शास्त्री, **36. दिल्ली (वसुन्धरा एन्क्लेव) :** पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, **37. दिल्ली (वेदवाड़ा) :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री जबलपुर, **38. दिल्ली :** पण्डित भोगीलालजी जैन उदयपुर, **39. दिल्ली :** नितिनजी नोगलराय, **40. दिल्ली :** गौरवजी शास्त्री मेरठ, **41. दिल्ली (पालम कॉलोनी) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, **42. दिल्ली (पटपडगंज गांव) :** पण्डित राहुलजी शास्त्री सेमारी, **43. दिल्ली (सरोजनी नगर) :** पण्डित सुदीपजी शास्त्री ध्रुवधाम, **44. दिल्ली :** शैलेशजी शास्त्री इटावा, **45. दिल्ली :** पण्डित स्वतंत्रभूषणजी शास्त्री, **46. दिल्ली :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री कोटा, **47. दिल्ली :** पण्डित अविनाशजी शास्त्री छिंदवाड़ा, **48. घटप्रभा :** पण्डित उदयजी शास्त्री जयपुर, **49. हिसार :** पण्डित निर्मलकुमारजी एडवोकेट एटा, **50.बेलगांव :** पण्डित स्वानुभव शास्त्री गुना, **51. फरीदाबाद :** पण्डित कैलाशचंदजी शास्त्री बीकानेर, **52. मदुरै :** पण्डित अजयजी शास्त्री पीसांगन, **53. बोरगांव :** पण्डित सुधाकरजी शास्त्री इण्डी।

पत्र संपादक संघ की बैठक जयपुर में

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक जयपुर स्थित चूलगिरी खानियांजी में डॉ. चिरंजीलाल बगड़ा (सम्पादक- दिशाबोध) की अध्यक्षता में दिनांक 15 व 16 अक्टूबर 2011 को आयोजित है।

इस अवसर पर एक कार्यशाला भी आयोजित है। भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था है।

कृपया पधारने की पूर्व सूचना महामंत्री अखिल बंसल को 07737241003 पर अवश्य दें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाइट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अगस्त 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें - ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in फैक्स : (0141) 2704127